Unit-2

राज्य

राज्य एवं उसके आवश्यक तत्व
State and Its Essential Elements

प्रश्न :- राज्य की परिभाषा बताते हुए उसके प्रमुख तत्वों का वर्णन कीजिये।

रूपरेखा

- प्रस्तावना
- राज्य का अर्थ
- राज्य का परिभाषा
- राज्य के आवश्यक या निर्माण तत्व
- निष्कर्ष
- सन्दर्भ ग्रंथ

* प्रस्तावना :—

"राज्य के लक्षणों का अध्ययन न तो हीगल जैसी उपासना की भावना से और न स्पेन्सर जैसी तुच्छता की भावना से वरन् यथार्थता की दृष्टि से किया जाना चाहिए।" — मैकाइवर

'राजनीति विज्ञान' राज्य का विज्ञान है और इसमें प्रमुख रूप से राज्य का ही अध्ययन किया जाता है। अतः सबसे पहले हमें राज्य के अर्थ और रूप का ज्ञान प्राप्त कर लेना चाहिए। आज राज्य शब्द का प्रयोग कई अर्थों में किया जाता है जिनमें से कुछ अर्थ निश्चित रूप से भ्रामक है।

उदा० :— के लिए भारत तथा अमरीका के संविधानों में संघ की इकाइयों को राज्य कहा गया है लेकिन राजनीति विज्ञान की दृष्टि से ये राज्य नहीं वरन् राज्य की इकाइयां मात्र हैं।

राजनीति विज्ञान में 'राज्य' का प्रयोग विशिष्ट तथा वैज्ञानिक अर्थ में किया जाता है और इस रूप में ही हमारे द्वारा राज्य का अध्ययन किया जायगा।

* राज्य का अर्थ (Meaning: state) :—

'राज्य' अंग्रेजी शब्द 'state' का हिन्दी अनुवाद है। प्राचीन समय में यूनान के दार्शनिक राज्य के लिए 'Polis' (पॉलिस) और प्राचीन रोमन दार्शनिक 'Civitas' (सिविटास) शब्द का प्रयोग करते थे। इन दोनों ही शब्दों का अर्थ उस समय के 'नगर-राज्यों' से था।

ट्यूटन जाति राज्य के लिए 'status' (स्टेटस) शब्द का प्रयोग करती थी और 'state' शब्द इसी स्टेटस से बना है। 'राज्य' के अर्थ में 'state' शब्द का सबसे पहले इटली के महान विचारक मैकियावली ने अपनी पुस्तक 'प्रिन्स' में किया था जो कि 1514 में प्रकाशित हुई थी।

* राज्य की परिभाषा (Definition of state)

राज्य की परिभाषा विद्वानों के निम्न लिखित है :—

① अरस्तू के शब्दों में :—

"राज्य परिवारों तथा ग्रामों का एक समुदाय है जिसका उद्देश्य पूर्ण और आत्मनिर्भर जीवन की प्राप्ति है।"

② विल्सन के अनुसार :— "राज्य एक निश्चित भू-भाग में कानून के पालन के लिए संगठित जन-समुदाय है।"

③ बर्गेस के मतानुसार :— "राज्य मानव जाति का निश्चित भाग है जो राजनीतिक इकाई के रूप में देखा जाता है।"

④ गिलक्राइस्ट के शब्दों में :— "राज्य निश्चित प्रदेश के राजनीतिक दृष्टि से संगठित लोग राज्य है।"

* राज्य के आवश्यक या निर्माण तत्व

राज्य निर्माण के चार आवश्यक तत्व है :—

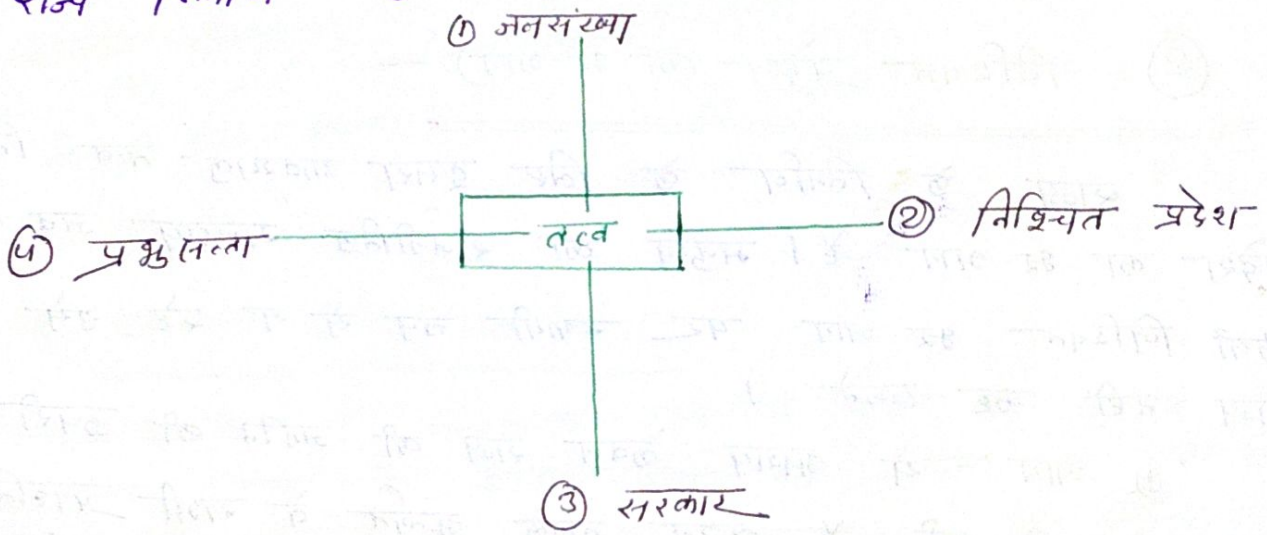

① जनसंख्या

मानव के सामाजिक गुण के आधार पर ही राज्य का जन्म हुआ है और व्यक्तियों से मिलकर ही राज्य का निर्माण होता है। अतः सभी विद्वान जनसंख्या को राज्य के आवश्यक तत्व के रूप में स्वीकार करते है।

राज्य के लिए सर्वप्रथम तो जनसंख्या चाहिए। मनुष्यों के अभाव में राज्य के अस्तित्व का प्रश्न ही नहीं है। किसी जनशून्य प्रदेश को राज्य का नाम नहीं दिया जा सकता है।

प्राचीनकाल मे छोटे-छोटे नगर-राज्य थे। इसीलिए प्लेटो ने एक आदर्श राज्य की जनसंख्या 5040 बतायी थी। रूसो जो कि प्रत्यक्ष प्रजातन्त्र का समर्थक था, उसने आदर्श राज्य के लिए 10 हजार जनसंख्या उचित बतायी थी। परन्तु आधुनिक युग मे यह जनसंख्या राज्य-निर्माण चीन व भारत जैसे राज्य मे 100 करोड़ व 75 करोड़ है इसरी ओर पुर्तगाल, मोनाको, सानमेरिनो जैसे छोटे राज्य भी है जिनकी जनसंख्या लाखों मे ही है।

नि: सन्देह शारीरिक-बौद्धिक-सांस्कृतिक दृष्टि से उन्नत लोग एक श्रेष्ठ राज्य का निर्माण कर सकते है।

② निश्चित प्रदेश (या भू-भाग) —

राज्य के निर्माण के लिए दूसरा आवश्यक तत्व निश्चित प्रदेश का भू-भाग है। मनुष्य का राजनीतिक समुदाय जब तक किसी निश्चित भू-भाग पर स्थायी रूप से न रहे, उसे राज्य नहीं कह सकते।

भू-भाग :- से आशय केवल राज्य की जमीन की ऊपरी सतह से ही नहीं है, वरन् इसके अन्तर्गत वे सभी प्राकृतिक साधन भी आते है जो किसी राज्य को स्थल जल और वायु से प्राप्त हो। अत: किसी राज्य में बह रही नदियाँ, सरोवर, झील, पर्वत, खनिज पदार्थ, 14 कि.मी. तक का समुद्र मार्ग, राज्य के भू-भाग के ऊपर अनिश्चित दूरी तक का मार्ग राज्य के भू-भाग मे शामिल है।

③ सरकार (Government) :-

राज्य के लिए यह भी आवश्यक है कि निश्चित भू-भाग पर रहने वाली जनता राजनीतिक रूप में संगठित हो और उसकी एक सरकार हो। दूसरे शब्दों में हम कह सकते हैं कि सरकार राज्य का संगठनात्मक तत्व है।

गिलक्राइस्ट के शब्दों में :- "सरकार राज्य का संगठन एवं यन्त्र है जिसके माध्यम से राज्य की इच्छा की अभिव्यक्ति होती है।"

सरकार के बिना राज्य की कल्पना नहीं की जा सकती है।
सरकार राज्य का मूर्त ~~रूप~~ स्वरूप है।

आज सरकार के तीन अंग देखने को मिलते हैं।

(1) व्यवस्थापिका ⇓ जो कि कानून बनाती है

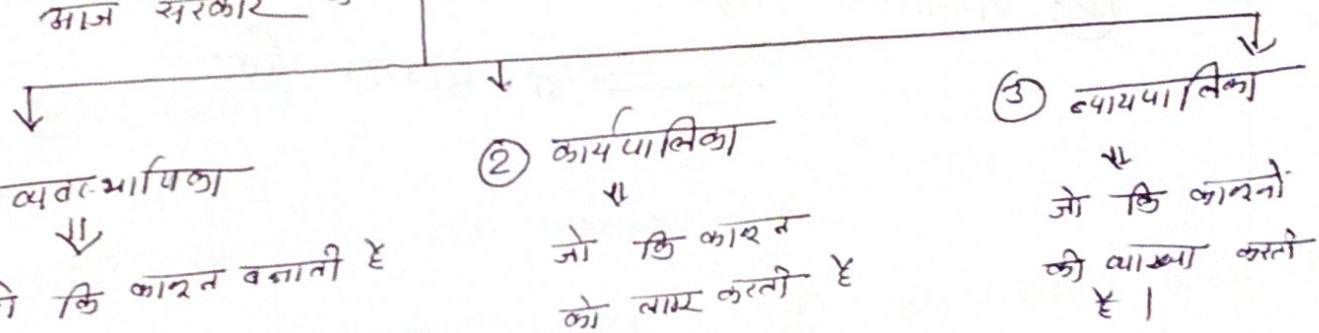

(2) कार्यपालिका ⇓ जो कि कानून को लागू करती है

(3) न्यायपालिका ⇓ जो कि कानूनों की व्याख्या करती है।

④ प्रभुसत्ता (Sovereignty) :-

प्रभुसत्ता या सम्प्रभुता राज्य का चौथा अंग, परन्तु सर्वाधिक महत्वपूर्ण तत्व है, इसे राज्य का प्राण कहा ~~सत्त~~ सकता है। प्रो. विलोबी के शब्दों में, "प्रभुसत्ता राज्य की सर्वोच्च इच्छा है।"

प्रभुसत्ता से तात्पर्य यह है कि राज्य अपने आन्तरिक और बाह्य मामलों में स्वतन्त्र हो। स्वतन्त्रता प्राप्ति के पहले भारत का प्रभुसत्ता ब्रिटिश था, स्वतन्त्रता के बाद प्रभुसत्ता भारत के हाथों में है।

निष्कर्ष :-

उपर्युक्त विवेचन से स्पष्ट है कि राज्य के निर्माण के लिए चार तत्व आवश्यक है :- जनसंख्या, निश्चित प्रदेश, सरकार और प्रभुसत्ता। इनमें से किसी भी एक तत्व के अभाव मे किसी संगठन को राज्य नहीं कहा जा सकता है।

संदर्भ ग्रंथ-

(1) राजनीति विज्ञान
— राम प्रसाद एण्ड संस

(2) राजनीतिक सिद्धान्त का परिचय
— डॉ. पुखराज जैन